।। हदगुरू पारख को अंग ।।
मारवाडी + हिन्दी
(१–१ साखी)

महत्वपूर्ण सुचना–रामद्वारा जलगाँव इनके ऐसे निदर्शन मे आया है की,कुछ रामस्नेही सेठ साहब राधाकिसनजी महाराज और जे.टी.चांड्क इन्होंने अर्थ की हुई वाणीजी रामद्वारा जलगाँव से लेके जाते और अपने वाणीजी का गुरु महाराज बताते वैसा पूरा आधार न लेते अपने मतसे,समजसे,अर्थ मे आपस मे बदल कर लेते तो ऐसा न करते वाणीजी ले गए हुए कोई भी संत ने आपस मे अर्थ में बदल नही करना है । कुछ भी बदल करना चाहते हो तो रामद्वारा जलगाँव से संपर्क करना बाद में बदल करना है ।

* बाणीजी हमसे जैसे चाहिए वैसी पुरी चेक नही हुअी,उसे बहुत समय लगता है। हम पुरा चेक करके फिरसे रीलोड करेंगे। इसे सालभर लगेगा। आपके समझनेके कामपुरता होवे इसलिए हमने बाणीजी पढनेके लिए लोड कर दी ।

|| अथ हदगुरू पारख को अंग लिखंते ||

हद का गुर सुखराम क्हे || सुणज्यो ईण अेनाण ||
क्रिया करणी ध्रमरे || भ्रम द्रढावे आण ||१||

हद के गुरु याने काल के मुखमे रखनेवाले गुरु यानेही काल के मुखसे न निकालनेवाले गुरु याने ही महाप्रलय मे नष्ट होनेवाले आकाशतक पहुँचने वाले गुरु उनके ज्ञान ध्यान के चिन्ह क्या है यह सभी नर नारीयाँ समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीको बता रहे है । ये गुरु ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,रामचंद्र,कृष्ण आदि जो हदमे रहते है याने काल के मुलुख मे रहते उनके समान सुख पानेकी करणीया तथा धर्म बताते है व उसमे लगाते है । ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार इनके करणीयो मे तथा धर्म मे काल से मुक्त होने की विधी है यह शिष्य के मनमे भ्रम गाढा करते है । ||१||

नांव बिना म्हेमा करे || सो हद का गुर होय ||
सुणज्यो सब सुखराम कहे || क्या सांगी क्यां लोय ||२||

सतस्वरुप के नामके सिवा त्रिगुणी माया की करणीयाँ व धर्म की महीमा करते है । ये हर के गुरु है याने काल के मुख मे बैठे हुए गुरु है । ये भेषधारी हो या ग्रहस्थी हो सभी हद के गुरु है याने काल का चारा है ।||२||

जप तप तीरथ जिग की || सोभा करे बणाय ||
हद गुर सो सुखराम के || पढे पढावे आय ||३||

ये हद के गुरु ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदि के जप,तीर्थ एवम् यज्ञ आदि की शोभा शिष्योके पास बना बनाके बखाणते । ये जप,तीर्थ,यज्ञ की विधी खुद भी सिखते व शिष्योको भी सिखाते ।||३||

मंत्र देवे सिष कूं || पांच सुणावे नांव ||
सो रेवे सुखराम के || हद के ऊले गांव ||४||

शिष्य के कान मे मंत्र देकर पाँच नाम बताते ऐसे गुरु आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज कहते हद के है । ये गुरु काल खाता ऐसे आकाश के पहले गाँव पहुँचनेवाले है ।||४||

तारक मंत्र देत हे || फेर तुळ छीको आय ||
सो गुर हद का जाणीये || सुखदेव कहे बजाय ||५||

ॐ नमः सत्य रामाय चिदानंदैक मुर्त ये प्रत्यक्ष तत्व बोधाय गुरु बेदोक्त लब्धते । यह शिष्यको तारक मंत्र देते है साथमे तुलसी का मंत्र देते है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज हर नारी को बजा बजाकर समजा रहे है की,ये सभी गुरु हदके है यह जानो । काल के मुख मे वास करनेवाले है ।||५||

सुरगण सेवा बंदगी || ले माळा सूं नांव ||
सुखदेव सो गुर हद का || सुण ज्यो रे सब गांव ||६||

जो गुरु सगुण याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति आदि देवताओकी तथा अवतारोके मुर्तीयोकी पुजा करते है व उनकी माला लेकर लेकर जप करते है । ये सभी गुरु हद याने काल के जबडे मे बैठे है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने सभी गाँव के नर नारीयो को सतस्वरुप ज्ञानसे समजने को कहाँ ।।।६।।

सांख जोग हर भक्त को ।। मत मंतर दे आण ।।
सो गुर सब ही हद का ।। सुखदेव कहे बखाण ।।७।।

जो गुरु सांख्य जोग का मंत्र सिखाते है,सांख्य जोग के आधार पे हर ब्रम्हका भेद देते है वे सभी गुरु हद के याने कालके मुख बैठे है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बखाण कर रहे ।।।७।।

साधन क्रिया अटकना ।। नेम बतावे कोय ।।
सो गुर सुखरामके ।। सब ही हद का होय ।।८।।

जो गुरु योगाभ्यासकी साधना बताते है नेती,धोती,बस्ती,कपाली आदि क्रिया बताते है और यह विधी करो वह विधी मत करो ऐसे अनेक बातोसे शिष्यको अटकाव करते है । शिष्यको अहिंसा,सत्य अस्तेय,ब्रम्हचर्य,अपरिग्रह,शौच,संतोष,तप,स्वाध्याय,ईश्वर प्राणीधान ऐसे दस नियम सिखाते है ये सभी हद के गुरु है याने शिष्य को काल के जबडेमे पहुँचानेवाले गुरु है यह समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारी को बोले ।।।८।।

कुंची देवे जोग की ।। देवे पवन गढ चाड ।।
सो गुर ही सुखराम के ।। जद तद हद का झाड ।।९।।

योगाभ्यास की किल्ली देते है व शिष्यको भृगुटी गढ पे चढा देते है वे गुरु हद मे पहुँचानेवाले ही है । ऐसे आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जताया ।।।९।।

तीन लोक च्यारूं दिसा ।। कर मे देत दिखाय ।।
वेई गुर हे हद का ।। सुखदेव कहे बजाय ।।१०।।

पृथ्वी लोक,पाताल लोक,स्वर्ग लोक चारो दिशाऐ(याने कोई भी कसर न रखते)हथेली पर दिखला देते वे भी गुरु हद के ही है याने शिष्य को काल के मुखमे रखनेवाले ही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बजाके समझा रहे ।।।१०।।

मन की बातां सब कहे ।। दे चावे सो आण ।।
प्रमातम के भेद बिना ।। सुखदेव अे हद गुरू जाण ।।११।।

शिष्य के मन की बाता सब कहते व उन्हे जो चाहिए वह वस्तु सिध्दाईसे प्राप्त करा देते ये सभी गुरु हद के गुरु है यह जाणिए । परमात्मा के भेद बिना जो भी गुरु सृष्टीमे है वे काल के मुखमे खुद फसे है व शिष्य को फसाते है ।।।११।।

सरगुण निरगुण ज्ञान रे ।। पडतां ओड न कोय ।।

आतम तत्त के भेद बिना ।। सुखदेव अे हद गुर होय ।।१२।।

सगुण याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदि का ज्ञान तथा पारब्रम्ह निरगुण का ज्ञान सिखानेमे अंत ही नही आता वे सभी गुरु हद के है यह जाणिए । इस जगत मे आत्मामे परमात्मा है ये तत्त प्रगट कर देनेवाले भेद बिना सभी हद के गुरु है यह जानो । ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयो को बोले ।।।१२।।

हद बेहद की बात रे ।। सिख सुणावे आण ।।
सो गुर तो सुखराम के ।। सब ही हद का जाण ।।१३।।

हद याने ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति व अवतारोकी बात तथा बेहद याने पारब्रम्ह की बात सिखते है व नर नारीयोको सिखाते है ऐसे सभी गुरु हद याने काल के मुख मे फसे है यह जानो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराजने जताया ।।।१३।।

अेक पलक के माह रे ।। तीन लोक फिर जाय ।।
सुखदेव पद बिन चीनीया ।। सब गुर हे हद माय ।।१४।।

एक पलमे पृथ्वीलोक,पाताल लोक व स्वर्ग लोक फिरकर आ जाते ऐसे गुरु भी हद याने काल के जबडे मे बैठे है यह समजो । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारीयोको बोले की काल के परे का अमर पद पाया नही वे सभी गुरु व शिष्य हद मे याने काल के मुख मे बैठे है यह जाणो ।।।१४।।

धर अमंर कूं भान के ।। फेर नर थापे कोय ।।
सुखदेव पद के भेद बिन ।। सो हद का गुर होय ।।१५।।

धरती,आकाश को भंग करके फिरसे धरती व आकाश की जैसे के वैसे स्थापना करते है ऐसा भंग करके फिरसे स्थापना करनेवाले गुरु हद याने काल के जबडे मे ही बैठे है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले सतस्वरुप पद के पहुँच बिना सभी गुरु हदगुरु है काल का चारा है । ।।१५।।

तीन लोक का अरथ रे ।। काडे ब्हो बिध जोय ।।
चोथे पद बिन जाणीया ।। सुखदेव हद गुर होय ।।१६।।

तीन लोक के ब्रम्हा,विष्णु,महादेव,शक्ति,अवतार आदि के ज्ञानसे नर नारीयोको भारी भारी विधी विधी से शकूनादि बताते है वे सभी गुरु हद के है । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले मृत्युलोक,पाताल लोक,स्वर्गलोकके परेका आनंद लोक यह चौथा पद उसका ज्ञान जो जानते नही व मृत्युलोक,पाताल लोक व स्वर्गलोक इन तीन पदका ज्ञान भाती भाती से जानते है वे सभी हद के गुरु है मतलब काल के चंगुल मे पक्के फसे हुए गुरु है ।।।१६।।

आतम मे प्रमात्मा ।। आ गत लखे न कोय ।।
तब लग सुण सुखराम के ।। सब हद का गुर होय ।।१७।।

आत्मा मे परमात्मा है यह गती जाणी नही तबतक के सभी गुरु हद के याने काल के जबडे मे फसे हुए गुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।१७।।

करामात करतूत रे ।। ब्होत सिधाई माय ।।
जन सुखदेव गढ ना चडया ।। तो हद का गुरू कहाय ।।१८।।

इसप्रकार अनेक प्रकार से करामाती है,कर्तृत्ववान है सिध्दाईयो से ओतप्रोत भरे है परन्तु सतस्वरुप गढ पे चढे नही है वे सभी गुरु हद के याने काल के जबडे मे अटके हुए है । ।।१८।।

द्वादस कंवळ न छेदीया ।। इण काया मे जोय ।।
जब लग सुण सुखराम के ।। सब हद का गुर होय ।।१९।।

इस कायामे पुर्वके छः कंठकमल,हृदयकमल,मध्यकमल,नाभी कमल,लिंग स्थान व गुदाघाट व पश्चीमके छःबंकनाल, मेरुस्थान, त्रिगुटी, चिदानंदब्रम्ह ,शिवब्रम्ह,पारब्रम्ह कमल छेदन कर सतस्वरुप गढ पे पहुँचे नही तब लग के सभी माया मे प्रविण से प्रविण गुरु हद के याने काल के मुख मे बैठे है यह समजो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने सभी नर नारीयो को जताया ।।।१९।।

पूरब दिस भ्रुगुटी चडे ।। षट कंवल कूं जोय ।।
वेही गुर सुखराम क्हे ।। सुण हद ही का होय ।।२०।।

जो पूरब दिशा से (संखनाल से मूलद्वार से चढते-चढते) भृगुटी मे जाते है और बीच के छवो कमल देख लेते है । वे गुरू भी सतगुरू सुखरामजी महाराज कहते है,कि हद्दके ही है । ऐसा देखो । ।। २० ।।

बारी द्वादस ऊपरे ।। जब लग खोली नाय ।।
तब लग सुण सुखराम केहे ।। सब गुर हद के माय ।।२१।।

जिसने बारह(कमलो के उपर की)खिडकी जब तक खोली नही । तब तक ये सभी गुरू हद्दमे ही(इधर के ही)है । ।। २१ ।।

लाख बात की बात या ।। सुण ज्यो रे सब कोय ।।
सुखदेव निर्गुण भेद बिन ।। सब हद का गुर होय ।।२२।।

मै तुम्हे लाख बात की एक बात बताता हुँ यह तुम सभी सुनो । सतस्वरुप निर्गुण के भेद बिना सभी हद के याने काल के जबडे मे अटके हुए गुरु है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।२२।।

षट द्रशण गुर हदका ।। बेरागी सब लोय ।।
सत्तगुर तो सुखराम के ।। सब सूं न्यारा होय ।।२३।।

जोगी,जंगम,सेवडा,सन्यासी,फकीर,ब्राम्हण ये सभी छःदर्शनी तथा जगतके सभी प्रकारके बैरागी हदके गुरु है । हदके परे के सतगुरु इन सभीसे न्यारे रहते ऐसा आदि सतगुरु

सुखरामजी महाराज बोले ।।।२३।।

षट द्रशण गुर देह का ।। सुण लीज्यो सब कोय ।।
सुखिया गुण फळ देत हे ।। हदका हद मे होय ।।२४।।

षटदर्शन ये गुरु जीव के नही होते(ये गुरु देह के होते है यह सभी सुन लो । ये गुरु जादा मे जादा विष्णु लोक के देहतक के सुख देते । यह विष्णु लोक सहीत सभी लोकको महाप्रलय मे काल खाता । आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले जादा मे जादा विष्णु के देह तक काही फल मिल सकता उसके परेका अमरपद के अमर देह का फल नही मिलता यह सभी लोग सुन लो ।।।२४।।

बेरागी गुर भेष का ।। जोसी पाडे नांव ।।
बिद्या का गुर सेवडा ।। आरा का गुर गांव ।।२५।।

बैरागी गुरु शिष्य को अपना बैरागी भेष देने के गुरु है । जोशी जन्मने के पश्चात देह का नाम रखनेवाले गुरु है। सेवडा पाँच इंद्रियोके सुख त्यागने की विधी सिखानेवाले गुरु है ।आरा याने बारवे पे कैसे करना यह गाँव का होशियार,शहाणा नर बताता है। इसप्रकार यह होशीयार,नर आरा के कार्य का गुरु है। इसप्रकार जगत मे अनेक गुरु है। ये कोई भी काल कैसे मारना यह बतानेवाले सतगुरु नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज सभी नर नारी से बोले । ।।२५।।

बेद गरू इण रोग का ।। ईद्याँ का गुर भोग ।।
मन का गुरू तो ज्ञान हे ।। प्राणा का गुर जोग ।।२६।।

रोग का गुरु बैद्य है। इन्द्रीयोका गुरु देह का भोग है। मन का गुरु ज्ञान है। प्राण याने श्वास का गुरु योग है । इसप्रकार हद के अनेक गुरु है । ये आवागमन से मुक्त होने की विधी बताने वाले एक भी गुरु नही है ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले ।।।२६।।

सत्तगुर बिन गुर सो करो ।। कारज सरे न कोय ।।
जन सुखदेव जी केत हे ।। सुण लीज्यो सब लोय ।।२७।।

आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज बोले काल से मुक्त कर देनेवाले सतगुरु के बिना हर रोज के सौ सौ गुरु किए तो भी मोक्ष का कारज सरेगा नही। यह बात सभी नर नारी सुण लो ऐसा आदि सतगुरु सुखरामजी महाराज ने जताया ।।।२७।।

।। इति हद गुरूपारख को अंग संपूरण ।।